Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ

# सामवेदीया रुद्री ।

अग्निहोत्रिणा पं० अग्निष्वात्तशास्त्रिणा मन्त्राचार्येण संपादिता ।

2/50

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथसामवेदरुद्राध्याय-जपः ॥ अविरलमदजलनिवहं भ्रमरकुलानीक-सेवितकपोलम् ॥ अभिमतफलदातारं कामेशं गण-पतिं वन्दे ॥ १ ॥ सम्पूजकानां परिपालकानां जिते-न्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम् ॥ देशे च राष्ट्रे च कुले च राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् महेशः ॥ २ ॥ तत्रादौ संकल्पपूर्वकांगन्यासादिपूजाविधिः ॥ तत्रानाध्या-येष्वपि सांगस्य रुद्राध्यायस्य जपो भवति इतरे रुद्री-जपादयश्चत्वारो न भवंति ॥ प्रक्षालितहस्तपादो बद्ध-शिखो यज्ञोपवीती आसने कुशोत्तरे प्राङ्मुख उपविश्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



चम्य खानि संस्पृश्य प्राणायामं कुर्यात् ॥ ततः गुरु-
भ्यो नमः ॥ गणपतये नमः ॥ श्रीसदाशिवाय नमः ॥
इति नमस्कृत्य ताम्रपात्रे जलपुष्पाक्षतानि कृत्वा
तत्पात्रं हस्तेनादाय ॥ अत्राद्य मासे पक्षे तिथौ वासर
इत्युच्चार्य श्रीशिवप्रीतये नित्यविधिरूपं श्रीमहा-
देवस्य पूजापूर्वकम् सांगरुद्राध्यायस्य जपमहं करिष्ये
॥ १ ॥ रुद्राभिषेकं वा ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ इति-
मंत्रेण स्वात्मानं रुद्ररूपं भावयेत् ॥ ततोऽगषडंगन्या-
सान् कुर्यात् ॥ ते यथा ॥

ओंकारस्य ब्रह्माऋषि दैवीगायत्रीछन्दः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परमात्मा देवता शिखायां न्यासे विनियोगः ॥
ॐ व्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजाऋषयो
गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः ॥
तत्सवितुरितिविश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता
देवता ॥ गायत्रस्य पुष्कलऋषिर्गायत्रीछन्दः
सविता देवता शिरसि न्यासे विनियोगः ॥ ॐभू-
र्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्यधीमहि ॥
धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐतत्सवितुर्वरेणियोम् ॥
भार्गोदेवस्यधीमाही २ ॥ धियोयोनः प्रचो १२१२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० हुंम् ॥ आ २ ॥ दायो ॥ औ ३४५ ॥ २ ॥ नमस्तइति- रु०
२ अग्निर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता ललाटन्यासे वि-
नियोगः ॥ नमस्तौ ॥ होग्नायि ॥ ओजसा ३ यि ॥
गृणा२न्ता २३४ यिदे ॥ वाकृष्टया २ः ॥ अमाये ३ः ॥
त्रो२मा २३४ औहोवा ॥ त्रमर्दया २३४५ ॥ ३ ॥
रौरवयौधाजययोः साम्नोरुरुयुधाजिनौऋषी बृह-
तीछन्दः सोमोदेवतानेत्रयोर्न्यासेविनियोगः ॥ पुनानः
सोमा ३ धारा २३४ या ॥ आपोवसानोअर्षस्या- २
रत्नधायोनिमृतस्यसा २ यिदंसायि ॥ ओहा ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उवा ॥ उत्सोदेवोहिरा २३ होयि ॥ ओहा ३ उवा ॥
राययां ॥ औ३ होवा ॥ हो ५ ई ॥ डा ॥४॥ पुनां
३१ ॥ नां ३ः सो ॥ मं ॥ धारीं २३४ यां ॥ आपो
३ ॥ वंसा२ ॥ नआं ३४५ ॥ षां २३४ सीं ॥
आंरां त्नंधाः ॥ यो ॥ निमृता २ ॥ स्यंसां ३४५ यि ॥
दां २३४ सी ॥ उत्सा २ः ॥ दांयिवो २ ॥ हिरां ३४५ ॥
ण्यां २३४ यां ॥ ६ ॥ प्राणापानयोः साम्नोर्वशिष्ठ
ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रोदेवता नासिकयोन्यांसे
विनियोगः ॥ हांउ ॥ ३ ॥ आंयुः ॥ ३ ॥ सांत्यं ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० इन्द्रन्नरो ॥ ने३मधि ॥ ताँहवन्तायि ॥ यत्पारियाः ॥ रु०

३ युनज ॥ तायिधियस्ताः ॥ शूरोनृषा ॥ ता ३श्रव ॥

संश्चकामायि ॥ औगोमतायि ॥ व्रजेभ ॥ जातुवन्नाः ॥

हाउ ॥ ३ ॥ आयुः ॥ ३ ॥ सात्यं ॥ २ ॥ सत्या ३४ ॥

औहोवा ॥ ई२३४५ ॥ ६ ॥ हाउ ॥ ३ ॥ आनो-

हिय ॥ ३ ॥ मन दोहम् ॥ ३ ॥ इन्द्रन्नरो ॥ ने३मधि ॥

ताहवन्तायि ॥ यत्पारियाः ॥ युनज ॥ तायिधि-

यस्ताः शूरोनृषा ॥ ता३श्रव ॥ संश्चकामायि ॥ ३

औगो मतायि ॥ व्रजेभ ॥ जातुवन्नाः ॥ हाउ ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओनोहिय ॥ ३ ॥ मंनदोहम् ॥ २ ॥ मंना २३ ॥
दोहा ३४ ॥ औहोवा ॥ ई २३४५ ॥ ७ ॥ बृहद्रथं-
तरयोः साम्नोर्भरद्वाजवशिष्ठौऋषी बृहतीछन्द इंद्रो
देवताकर्णयोन्यासेविनियोगः ॥ औहोयित्वामि-
द्धिहवामहा३ए ॥ सातौवाजा ॥ स्याकौरा २३४
वाः ॥ तुवा ३४ ॥ औहोवा ॥ वृत्रायिषुवायि ॥ द्रांसा
३१ त् ॥ पतिन्ना २३४ राः ॥ त्वांकाष्ठा ३४ ॥ औहोवा ।
सू२अर्वा २३४ ॥ ताः ॥ उहुवा ६ हाउ ॥ वा ॥
हस् ॥ ८ ॥ ओभित्वांशूरनोनुमोवा ॥ ओदुग्धा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० इवधेनवइंशानमस्यजगतः ॥ सुवा २३ ईशाम् ॥ रु०
४ आयिशानेमा २३यिन्द्रा३॥तास्थू२३४ षा ॥ ओवा ६
हाउवा ॥ ऋस् ॥१०॥ सेतुषाम्णः प्रजापतिर्ऋषि
स्त्रिष्टुप्छन्दः परमात्मादेवतामुखेन्यासेविनियोगः ॥
हाउ ॥ ३ ॥ सेतूꣳस्तर ॥ ३ ॥ दुस्तं ॥ रान् ॥ ३ ॥
दानेनादानेम् ॥ ३ ॥ हाउ ॥ ३ ॥ अहमस्मिप्रथम-
जाऋता २३ स्या ३४५ ॥ हाउ ॥ ३ ॥ सेतूꣳस्तर ॥ ३ ॥
दुस्तं ॥ रान् ॥ ३ ॥ अक्रोधेनक्रोधम् ॥ २ ॥ अक्रो- ८
धेनक्रोधम्॥हाउ॥पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यना२३मा ३४५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हाँउ ॥३॥ सेतूꣳस्तर ॥३॥ दुस्तं ॥ राँन् ॥ ३ ॥ श्रद्धयाँ
श्रद्धाम् ॥३॥ हाँउ ॥ ३ ॥ योमाददातिसइदेवमा २ ३
वा २३४८ त् ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ सेतूꣳस्तर ॥३॥ दुस्तं ॥
राँन् ॥ ३ ॥ सत्येनानृतम् ॥ ३ ॥ हाँउ ॥ ३ ॥
अहमन्नमन्नमदंतमा २ ३ द्मी ३४५ ॥ हाँउ ३ वा ॥
एषांगातिः ॥ ३ ॥ एतंदमृतं ॥ ३ ॥ स्वर्गच्छ ॥ ३ ॥
ज्योतिर्गच्छ ॥ ३ ॥ सेतूꣳस्तीर्त्वाचतुरा २३४५: ॥ १० ॥
सन्तेपयाꣳसीतिसोमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमोदेवता-
जिह्वायांन्यासेविनियोगः ॥ ओवा २ ॥ ३ ॥ संते-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



पया ॥ सी३संमु ॥ यन्तुर्वाजाः ॥ सम्भूषिणया ॥ नी
३अभि ॥ मातिर्षाहाः ॥ आप्यायमा ॥ नो३अभृ ॥
तायसोमा ॥ दिविश्रवा ॥ सी३उत ॥ मानिधिष्वा ॥
ओवा२ ॥ २ ॥ ओ२ ॥ वा२३४ ॥ औहोवा ॥
प्न्यं ॥ ३ ॥ ११ ॥ जराबोधेतिअग्निर्ऋषिर्गायत्री-
छन्दो रुद्रोदेवताग्रीवायांन्यासेविनियोगः ॥ जरा-
बोधावा ॥ ताद्विविड्ढाये ॥ विशायिवा२३यिशे ॥
यज्ञियाया ॥ स्तोमा६रुद्रा२३ या ॥ ह ॥ शीको ३४५
इ ॥ डा ॥१२॥ व्रतपक्षयोःसाम्नोःप्रजापतिर्ऋषिस्त्रि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवतास्कन्धयोर्न्यासेविनियोगः ॥ हाँउ
॥ ३ ॥ हृ१हृ हृ१हृ१ ॥ ३ ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ इन्द्रंन्नरो ॥ ने३मांधि ॥
ताहवन्तायि ॥ यत्पारियाः युनंज ॥ तायियधियस्ताः ॥
शूरोनृषा ॥ ता३श्रव ॥ सश्चकामायि ॥ आगोम
तायि ॥ व्रजेभ ॥ जातुवन्नाः ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ हृ१हृ३
हृ१हृ१ ॥ ३ ॥ हाउ ३ ॥ वा३ ॥ ई२३४५ ॥ १३ ॥
हाँउ ॥ ३ ॥ इहा ॥ हृ१हृ१हृ१ ॥ ३ ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ इन्द्रं-
न्नरो ॥ ने३मांधि ॥ ताहवन्तायि ॥ यत्पारियाः ॥
युनंज ॥ तायियधियस्ताः ॥ शूरोनृषा ॥ ता३श्रव ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० सेश्वंकामायि ॥ आगोमतायि ॥ व्रजेभ ॥ जातु रु०
६ वंन्नाः ॥ हाउ ॥ ३ ॥ ईहा ॥ हूऽहूऽहूँऽ ॥३॥ हाउ ३ ॥
वा३ ॥ ई २ः४८ ॥ १४ ॥ अश्विनोर्व्रतयोः साम्नोर-
श्विनौबृहत्याश्विनौबार्ह्वोन्यांसेविनियोगः ॥ होइहा ३॥
ईहोइहा ३ ॥ ३ ॥ ईमाउवांदिविष्टयाओहाउ ॥ उंस्रा-
हवन्तेअश्विनाओहाउ ॥ अयंवामह्वेवसेशचीवसू-
ओहाउ ॥ विशंविशऽहिगछथाओहाउ ॥ होइहा ३ ॥
ईहोइहा ३ ॥ २ ॥ होइहा ३ ॥ ईहोइहा ३४ ॥ ६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

औहोवा ॥ ई५हीहीहीहीहि ॥ १५ ॥ होइहा ॥ इहो-
इहा ॥ ३ ॥ इमाउवांदिविष्टयाहोहाउ ॥ उस्राहवंते
अश्विनाहोहाउ ॥ अयंवांमह्वेवसेशचीवसूहो हाउ ॥
विशंविशꣳहिगछ्थाहोहाउ ॥ होइहा ॥ इहोइहा ॥२॥
होइहा ॥ इहोइहा ३४॥ औहोवा ॥ई॥१३॥ इमाःप्रजा-
इतिप्रजापतिर्यजुःप्रजापतिः मनोजायिदितिर्द्दिशोनुष्टु
व्विश्वेदेवाःहृदिन्यासेविनियोगः॥हाउ॥३॥ इमाः॥३॥
प्रजाः ॥३॥ प्रजापते । होइ ॥२॥ प्रजापते ॥ हा ३ १उ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 वा२ ॥ ऐ ॥ हृदयम् ॥ २ ॥ ऐ ॥ हृदया३१उ ॥ वा२ ॥ 

 प्रजारूपमजीजने ३ ॥ इट्इडा २३४५ ॥१७॥ हाउ

॥ ३ ॥ मनोजायित् ॥ ३ ॥ हृदयमजायित् ॥ इन्द्रो

जयित् ॥ ३ ॥ अहमजैषम् ॥३॥ हाउ ॥ ३ ॥

यद्वचौहिरण्यं ॥ स्यां ॥ यद्वावर्चौगवामु ॥ तां ॥

सत्यस्यब्रह्मणोवं ॥ चाः ॥ तेनमासंक्सृजाम ॥

सायि ॥ हाउ ॥३॥ मनोजायित् ॥ ३ ॥ हृदयमजयित् 

॥ ३ ॥ इन्द्रो जयित् ॥ ३ ॥ अहमजैषम् ॥ ३ ॥ हाउ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ ॥ वा ॥ ए ॥ मनोजायिद्वृदयमजायादिन्द्रोजयिदहं-
मजयं ॥३॥ ए ॥ अहं६ सुवज्याती ३४५: ॥ १८ ॥
पिबासुतइतिजमदग्निर्बृहतींद्रः पृष्ठेन्यासेविनियोगः ॥
पिबा३सुतस्यरसिनाः ॥ मत्स्वानइंद्रगोमता २३ हो
इया ॥ आपिर्नोबोधिसधमाद्येवृधा २३ होइया ॥
अस्मा६आ २३ वा ॥ तुतायिधा २३ या ३४३:॥ओ
२३४५ यि ॥ डा ॥ १९ ॥ वातआवात्वितिकाशीतऋषि
गायत्रीछन्द इन्द्रोदेवता ॥ उदरेन्यासेविनियोगः ॥
वातआवातु ॥ भा५इषजाम् ॥ शाम्भूमय: ॥ मूनो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



हुंदा २३४इ ॥ हाँहोइ ॥ प्रनआँयूर्षी ३ ताँ ॥ रिषोत् ।
औ २३ होवा । ईडा ॥२०॥ आजुहोतेतिश्यावाश्व-
स्त्रिष्टुबग्निः नाभौन्यासेविनियोगः ॥ आजुहोता ॥
हविषामर्जया २ध्वाउवा २ ॥ निहोतारंगृहपतिंदधा २
यिध्वाउवा २३४ ॥ ईडा ३४ स्पदायि ॥ नमसारात
हाव्या २म् ॥ सापर्यता ॥ याजतम्पा २३ ॥ स्तियोवा ॥
आ५नोद्दहायि ॥ २१ ॥ आतून इतिप्रथमद्दिकस्य-
गौरीवितिर्गायत्रींद्रः कटयोन्यासेविनियोगः ॥ आतू-
नआ ॥ इन्तुमा २३ न्ताम् ॥ चायित्रंग्राभा २३६



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हाँयि ॥ संगृ२भाँया ॥ महाँहिस्तो २३४ हाँयि ॥ दक्षा२
यिणायिना ॥ महा २३ ॥ हा२स्ता २३४ औहोवा ॥
दक्षिणे३ना २३४५ ॥ २३ ॥ आँतूनइंद्रक्षुमाँऽताँम् ॥
चित्रा२ग्राँ २३४ भाँम् ॥ संगृभा २३४ याँ ॥ माँ३हा
३ ॥ हा२स्ता २३४ औहोवा ॥ दक्षिणेना २३४५ ॥
॥२३॥ उत्तरद्विकस्यआकूपारोगायत्रींद्रः ॥ कुक्षौन्या
सेविनियोगः ॥ आँतूनइं ॥ न्द्रक्षुमा६न्ताँम् ॥ चित्रंग्रा
भ६संगृभा २ याँ ॥ चित्रंग्राँभ६सं ॥ गृं ॥ औ३होइ ॥
माँ२३४याँ ॥ ऐहोयि ॥ महाँहस्तींदक्षा२३होयि ॥



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



औहो ॥ वाहो २३४ वा ॥ णा५यिनो ६ हाँयि ॥२४॥
१ औतूनइंद्रक्षुमा६न्ताम् ॥ चित्रंग्राभं६संगृभाया ॥ चि-
त्रंग्राभं६सं ॥ गृ२३ ॥ इ३४हा ॥ मा२३४या ॥ ऐहो
यि ॥ मंहाहस्तीदक्षा२३होयि ॥ औहो ॥ वाहो
२३४ वा ॥ णा५यिनो६हाँयि ॥ २५ ॥ सफपौष्कल-
योदेवाःप्रजापतिरुष्णिक्सोमः ॥ वृषणयोन्र्यासेविनि
योगः ॥ पवस्वा ३ मधु ॥ मत्ता २३४ माः ॥ इंद्राय-
सोमा २ ॥ क्रतुवायित्ता ३ मो ३ ॥ मा ३२३४ दाः॥ १
मेहायि ॥ द्युक्षाता३मो३ ॥ मा३४५दो ६ हाँयि ॥२६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इंद्रंमा३छंसु ॥ तांइ २३४ मायि ॥ वृषाणंया ॥ तूंहा
रा२३४याः॥श्रुष्टायिजाता॥सई२न्द्रा२३४५वा६५६ः॥
सुवविंदा २३४५ः॥२७॥श्यावाश्वांधीगवयोः श्यावा-
श्वांधीगुरनुष्टुप्सोमः ॥ उर्वोन्यांसोविनियोगः ॥ पुरो
३१॥ जी ३ ती ॥ वोअ ॥ धा३सः। एहिया ॥ सू ॥ताय
मादा ॥ यि ॥ त्नंवा २ यि ॥ एहिया २ ॥ अंपश्वाना
श्वा३र्थी३ ॥ ष्टा २३४ ना ॥ ऐहा २ यि ॥ एहिया २ ॥
संखायोदायिर्घो३जी३ ॥ हा ३४५ यो ६हायि ॥२८॥
पुरोजिती वो४न्धासः ॥ सुताय ॥ मादा २३ या ॥ हुंमा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० २१२ ॥ त्वंवंअपश्वानःश्नोथिष्टन ॥ सांखां ३ उवां ॥ रु०
१० योरदीं ॥ घीं२३जी ॥ ह्वियाम् ॥ औं २३ होवां ॥ हो
५इ ॥ डा ॥ २९ ॥ राजनरौहिणयोरिंद्रस्त्रिष्टुबिंद्रः ॥
जान्वोन्यांसिविनियोगः ॥ = ॥ हुं ॥ ३ ॥ हो ॥ ३ ॥ हः ॥ ३ ॥
औहा ॥ ३ ॥ औहोयि ॥ ३ ॥ इंद्रंनरो ॥ ने३मांधि ॥
ताहवंतांयि ॥ ३ ॥ वयोबृहंत ॥ ३ ॥ विभ्राष्टयेविध-
मणे ॥ ३ ॥ यत्पांरिया: ॥ युनंज ॥ तांयिधियंस्ताः ॥ ३ ॥
सत्यमोजः ॥ ३ ॥ रजः सुवः ॥ ३ ॥ शूरान्वृषा ॥ तां ३ श्रव ॥ १०
सश्चंकामांयि ॥ ३ ॥ मंद्रंसुधां ॥ २ ॥ मंद्रंसुधो ॥ षमूर्जं ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इषमूर्जं ॥२॥ ओंगोमतायि ॥ व्रजेभ ॥ जातुवन्नाः ॥
३॥ बृहद्यशः ॥३॥ दिविदुध्ये३हंस ॥२॥ दिविदध्ये३ ॥
हाउवा ॥ वागीडामूवोबृहद्धा २३४५ः ॥३०॥ हाउ ॥३॥
ओयिही ॥३॥ ओयिहिया ॥३॥ ओसाउ ॥३॥ ओयाम्
॥३॥ नामाः ॥३॥ किट् ॥२॥ इंद्रंनरोनेमधितांहवा २
न्तायि ॥ यत्पार्यायुनजतोधिया२स्ताः ॥ शूरोनृषाता-
श्रवसश्चका २मायि ॥ ओगो मतिव्रजे भजातुवा२न्नाः ॥
मना २३ होयि ॥ प्राणा २३ होयि ॥ चक्षू २३ होयि ॥
श्रोत्रा२३४होयि ॥ घोषा २३ होयि ॥ व्रता२३४हो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सा० यि ॥ भूता२३४होयि ॥ पाना२३४होयि ॥ चित्ता२३ रु०
११ ४होयि ॥ धीता २३ ४होयि ॥ सुवा २३ हौयि ॥ ज्यो
ता२३यिहौ २ ॥ वा २३४ औहोवा ॥ ऊ २३४५ ॥
३१ ॥ प्रथेइतिदिशोनुष्टुब्विश्वेदेवाः ॥ प्रतिष्ठासीति
द्यौर्जगतीद्यावापृथिव्यौ ॥ पादयोन्यासेविनियोगः ॥
हाउ ॥३॥ प्रथे॥३॥ प्रत्यष्ठाम् ॥३॥ हाउ ॥३॥ यद्वर्चो
हिरण्यं ॥ स्या । यद्वावर्चोगवामु ॥ ता ॥ सत्यस्यब्र-
ह्मणोवं ॥ चाः ॥ तेनमासंसृजाम ॥ सायि ॥ हाउ ॥ ११
३ ॥ प्रथे ॥३॥ प्रत्यष्ठाम् ॥३॥ हाउ ॥ ३ ॥ वा ॥ ए ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रथेप्रत्यँष्ठाम्॥३॥ एँ॥अहं३सुवज्योंती २३४५ः॥३२॥
प्रतिष्ठाँसिप्रति ॥ ष्ठां ॥ ३ ॥ वर्च्चोंसिमनोंसिऐही ॥
मन्येवांद्यावापृथिवीसुभोजसांवैही ॥ येअप्रथेथाम
मितमभियोजनांमँहा ॥ द्यावापृथिवीभवतऽस्योनां-
ऐही ॥ तेनोमुंचतमंऽहसांऐही ॥ प्रतिष्ठाँसिप्रति ॥ ष्ठां
॥ ३ ॥ वर्च्चोंसिमनोंसिऐही३॥ हाँउवा ॥ ए ॥ भूतम् ॥
३॥३३॥ एषोउषेतिउषागायत्र्याश्विनौ ॥ कवचेन्या-
सेविनियोगः ॥ एषोउषाः ॥ ओंपूर्व्वियाँ ॥ व्युच्छंति ॥
होवा ३ हांइ ॥ प्रियाँदा २३ इवा ३४ः ॥ स्तुषा ३४ इवाँ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



मा ३ ॥ शिवनो २३४ वा ॥ वृ ५ होदहायि ॥ ३४ ॥
आक्रंदयेतिशर्वऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इंद्रोदेवता॥अस्त्रन्या
सेविनियोगः ॥ आक्रंदयोवा ॥ कुरुघोषमहा २॥ आ
न्ता २ म् ॥ हरीइंद्रस्याभियोजया २ ॥ आशू २ ॥
ममर्मविधंददतामन्यो २ ॥ ग्रान्या २म् ॥ शेल्यात्मोप
तनुश्लोकमा २३ ॥ आ२ ॥ छा २३४ ॥ औहोवा ॥
अम् ॥ ३५ ॥ मानस्तोकेतनयेमानआयौ मानो
गोषुमानोअश्वेषुरीरिषः ॥ वीरान्मानोरुद्रभामिनोव- १२
धीर्हविष्मन्तः सदामित्वाहवामहे ॥ इत्यंगन्यासः ॥



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भ्राजेतिसूर्योगायत्र्यग्निः ॥ हृदयेन्यासेविनियोगः ॥
भ्राजा ॥ २ ॥ भ्राजा ३१ उ ॥ वा२ ॥ अग्नआयूंषि-
पवसे ॥ आसुवाजमिषंचनः ॥ आरबाधस्वदुच्छुनाम् ॥
भ्राजा ॥२॥ भ्राजा३१उ ॥ वा२ ॥ एँ ॥ भ्राज ॥३॥१॥
हृदयायनमः ॥ अबोध्यग्निरितिप्रजापतिर्ऋषि स्त्रि
ष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता ॥ शिरोन्यासेविनियोगः ॥
अँबोधियो ॥ ग्नाईः समिधाजनानाम् ॥ प्रताइधे ३
नूम् ॥ इवायतामुषासं ॥ यह्वाई३वा ॥ प्रवा२यामुज्जिं
हानाः ॥ प्रभाना२३वाः ॥ सस्रतनाकमच्छे ॥ इडा२३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० मा३४३॥ ओ२३४५ई॥ डा॥२॥ शिरसेस्वाहा॥ अद- रु०
१३ ईरुदितिउरुक्षय ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्द इंद्रोदेवता शिखा
यांन्यासेविनियोगः॥ अदर्दईरूत्॥ संमसृजोविश्वानि॥
त्वंमर्णा २३४ वान्॥ वंद्वधांनांअरामणाः॥ महान्ता
२३४मी॥ द्रंपर्वतंवियाद्दंः॥ सृजाड्वा२३४राः॥ अंबं
यंहाँन॥ वा२३न्हा३४३न्॥ ओ२३४५ई॥ डा॥३॥
शिखायैवषट्॥ आमंद्रैरितिवामश्चोऋषि बृहतीच्छन्द
इन्द्रोदेवताकवचेन्यासोविनियोगः॥ आंमंद्रैरा॥ द्रंह १३
रिभायियाहिमयूरा३रोमाभा३यिः॥मात्वाकायिचीत्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नियेमू२३४रीत् ॥ नपांशिनाः ॥ अतिधान्वे २ ॥ वंतो
६२३ ॥ ओरयिहा२३४औहोवा ॥ वा२३४याः ॥ ४ ॥
कवचायहुम् ॥ इदंविष्णुरितिविष्णुर्गायत्रीविष्णुः ॥
नेत्रयोर्न्यासेविनियोगः॥इदा६मे ॥ विष्णुर२ः ॥ विचक्रा
२३४ माये ॥ त्रायिधानि ॥ दधायिपा १ दार्म् ॥ सं
मूरहो १ ॥ ढा २३ मा ३ ॥ स्योरपा २३४ औहोवा ॥
ए ३ ॥ सुले १ ॥ ५ ॥ नेत्रत्रयायवौषट् ॥ आवोराजेति
वामदेवस्त्रिष्टुपरुद्रोदेवता ॥ अस्त्रन्यासेविनियोगः ॥
औंवोराजा ॥ नमध्वं ॥ रस्यरुद्राम् ॥ हो ॥ ता ॥ राम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० सं ॥ त्यंयजा३म् ॥ रोदसीयोः ॥ अग्निंपू ॥ रा ॥ तंन रु०
१४ यि ॥ त्नोरांचित्तात् ॥ हिरण्य ॥ रू ॥ पा३मंव ॥ सां-
३४३ यि ॥ कां३र्णू५ध्वा६५६म् ॥६॥ अस्त्रायफट् ॥
इतिषडंगः ॥ दशाक्षरमंत्रस्य प्रजापतिर्विराड्रुद्रः ॥
न्यासेविनियोगः ॥ ॐ नमःमूर्ध्नि ॥ ॐ नंनमोना
सिकायां ॥ ॐ मोंनमः ललाटे ॥ ॐ भंनमःमुखे ॥
ॐ गंनमःकंठे ॥ ॐ वंनमःहृदये ॥ ॐ तेंनमःदक्षिण
करे ॥ ॐ रुंनमःवामकरे ॥ ॐ द्रांनमःनाभौ ॥ ॐ यं- १४
नमःपादयोः ॥ एवंविन्यस्यध्यायेत् ॥ पश्चात् ॥ अथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्मानंरुद्ररूपंध्यायेत्पंचमुखंशिवं ॥ प्रतिवक्त्रंत्रिनेत्रंच
दशहस्तंदशायुधम् ॥ कमंडल्वक्षसूत्राहिबाणशूलधरं
हरं ॥ दंडंडमरुखट्वाङ्गाभयपात्रंपिनाकिनम् ॥ अष्ट-
सिद्धियुतंसौम्यंसर्वाभरणभूषितम् ॥ नीलग्रीवंशशां
कार्द्धशेखरंस्मितसुंदरम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशंनाग-
यज्ञोपवीतिनम् ॥ गजचर्मपरीधानंव्याघ्रचर्मोत्तरीय-
कम् ॥ वृषस्कंधसमारूढमुमादेहार्धधारिणम् ॥
दुर्दंतंकपिलजटांशिखासुद्योतकारिणम् ॥ अमृतेना-
प्लुतंहृष्टंदिव्यभोगसमाकुलं ॥ दिग्देवतैःसमायुक्तंसुरा-
सुरनमस्कृतं ॥ शाश्वतं सच्चिदानंदंध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.





अजेयममृतंनित्यंसर्वव्यापिनमीश्वरं ॥ एवंरुद्रतनूं-
सर्वेयक्षराक्षसपन्नगाः ॥ डाकिनीशाकिनीभूतपिशा-
चाजृंभकाग्रहाः॥ज्वलंतींतेप्रपश्यंतिप्रलयानलसन्नि-
भाम् ॥ एवंमहादेवंस्वहृदिध्यात्वापञ्चमानसोपचारैः
पूजांकुर्यात् ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ इतिमंत्रं
पठित्वा ॥ श्रीमहादेवायमानासिकंचंदनंसमर्पयामि ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ श्रीमहादेवाय मानासिकं
पुष्पंसमर्पयामि ॥२॥ ॐ नमोभगवतेरुद्राय ॥ श्रीमहा-
देवायमानासिकंधूपंसमर्पयामि ॥३॥ ॐ नमोभगवते
रुद्राय ॥ श्रीमहादेवाय मानासिकंदीपंसमर्पयामि ॥४॥



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमोभगवतेरुद्राय ॥ श्रीमहादेवायमानसिकंनैवेद्यं-
समर्पयामि ॥८॥ एवंसंपूज्यक्षणंतद्गतमनास्तिष्ठेत् ॥
इति मानसिकपूजा ॥ ततोबाह्यपूजांकुर्यात् ॥ तत्रा-
दौकलशवरुणावाहनादिघटपूजनांतमुक्तवत्कृत्वास्वा-
ग्रेसाधारंताम्रपात्रंसंस्थाप्य ॥ ॐ तत्पुरुषायविद्म-
हेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति
रुद्रगायत्र्या शुद्धोदकेनापूर्यतत्रगंधादीन्निक्षिप्य ॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवाय धीमहि ॥ तन्नो-
रुद्रःप्रचोदयात् ॥ इतिरुद्रगायत्र्यातज्जलमभिमंत्र्य
तेनोदकेन पूजासामग्रीं संप्रोक्ष्य ॐ नमोभगवतेरु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.





द्राय ॥ इतिदशाक्षरमंत्रेणस्वपुरोवर्त्ति पीठेलिङ्गंसंस्था-
प्यतस्मिन्देवमावाहयेत् ॥ ॐ नमोभगवते रुद्राय ॥
इतिदशाक्षरं पठित्वा ॥ श्रीमहादेवमावाहयामि ॥
इत्यावाह्य ॥ दशाक्षरमंत्रेणैवोपचारान्कुर्यात् ॥ ॐ
नमोभगवतेरुद्राय श्रीमहादेवायआसनंसमर्पयामि ॥
एवम् ॥ ॐ नमोभगवते रुद्राय श्री महादेवाय पाद्यं
समर्पयामि ॥ ॐ नमो भगवतेरुद्राय श्रीमहादेवाय
अर्घ्यंसमर्पयामि ॥ ॐ नमो भगवतेरुद्राय श्रीमहादे
वाय आचमनीयं समर्पयामि ॥ ॐ नमो भगवतेरु १६
द्राय श्रीमहादेवाय स्नानं समर्पयामि ॥ ॐ नमो भग-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय वस्त्रं समर्पया-
मि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचम-
नीयं समर्पयामि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादे-
वाय उपवीतं समर्पयामि ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय
श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय चंदनं समर्पयामि ॥
ॐनमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय पुष्पं समर्पया-
मि ॥ ॐनमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय धूपं सम-
र्पयामि ॥ ॐनमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० दीपं समर्पयामि ॥ ॐनमो भगवते रुद्राय श्रीमहादे- रु०
१७ वाय नैवेद्यं समर्पयामि॥ॐनमो भगवते रुद्राय श्रीम-
हादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ॥ एवं नैवेद्यांतैरुप-
चारैः संपूज्य षडंगस्य रुद्राध्यायस्य ऋष्यादीन्सं
स्मृत्य पठेत्॥ अथ ऋष्यादयः ॥ भ्राजाभ्राजेतिद्वयोः
सूर्यो गायत्र्यग्निः ॥ शुक्रचंद्रेतिद्वयोः प्रजापतिर्गाय-
त्री वायुः पूर्वस्योत्तरस्य चंद्रः ॥ राजनरौहिणयोरिंद्रस्त्रि
ष्टुबिन्द्रः ॥ अग्नेर्व्रतस्याग्निर्गायत्र्यग्निः ॥ वायोर्व्र-
तस्य वायुरत्याष्टिः सोमः ॥ श्लोकानुश्लोकानां प्रजापति १७
स्त्रिष्टुबिंद्रो नमस्तेत्यस्य त्वष्टा ॥ सेतुषाम्णः प्रजा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पतिस्त्रिष्टुबात्मा ॥ अबोध्यग्निरिति प्रजापतिस्त्रि-
ष्टुबग्न्युषसौ ॥ महित्रीणामितिद्वयोः पष्ठवागायत्री
प्रजापतिः ॥ त्वावतइतिधुरांसाकमश्वोगायत्रींद्रः ॥
इन्द्रन्नरो इतिगौरीवितिस्त्रिष्टुबिंद्रः ॥ त्यमुष्वितिद्व
योस्तार्क्ष्यस्त्रिष्टुबिंद्रः॥त्रातारमितींद्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः॥
सोमः पुनानइतिप्रजापत्युष्णिक्सोमः ॥ ससुन्वइ
त्यस्य प्रजापतिरुष्णिकसोमः ॥ विश्वतोदावन्निति
प्रजापतिर्विष्टारपङ्क्तिरिंद्रः॥उदुत्तमामितिवरुणगौतमौ
त्रिष्टुब्वरुणादित्यौ ॥ अदर्दरुदितिद्वयोरुरुक्षयस्त्रि-
ष्टाविंद्रः ॥ सुष्वाणासइतिद्वयोः पृथुस्त्रिष्टुबिंद्रः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० आतून इतिपूर्वद्वयोगौरीवितिरुत्तरयोराकूपारोगाय- रु०
१८ त्रींद्रः ॥ मृज्यमानः सुहस्त्येतिपूर्वस्य उक्ष्णोरन्ध्रः
षष्ठस्याग्निर्बृहतीसोमः ॥ आमंद्रैरिति त्रयाणां वा-
म्रोबृहतींद्रः ॥ आनोविश्वा इतित्रयाणां वासिष्ठो बृह-
तींद्रः ॥ प्रसेनानीरिति त्रयाणां कुत्सस्त्रिष्टुप्सोमः ॥
पवित्रन्त इतिद्वयोरादित्यो जगती ब्रह्मणस्पतिः ॥
इदंविष्णुरिति विष्णुर्गायत्री विष्णुः ॥ प्रक्षस्य वृष्णो
इतिविष्णुर्जगती वैश्वानरः ॥ प्रकाव्यमितिवराह-
स्त्रिष्टुब्वराहः ॥ सहस्रशीर्षेत्यादि पंचानां नारायणो- १८
नुष्टुप्पुरुषः ॥ षष्ठस्य नारायणो गायत्र्यात्मा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवोराजेति वामदेवस्त्रिष्टुब् रुद्रः ॥ तद्वोगायेति चतुर्णां रुद्रो गायत्रींद्रः ॥ आज्यदोहत्रयाणामग्निर्वैश्वानरस्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः ॥ देवव्रतानां देवाउत्कृतीरुद्रः ॥ वामदेव्यस्य वामदेवो गायत्रींद्रः ॥ श्री महादेवरुद्रप्रीतये जपे विनियोगः ॥ अभिषेके विनियोग इत्यभिषेके ॥ अथ गायत्र्यादि रुद्रारंभः ॥ = ॥

॥ = ॥ इति न्यासः ॥ अथ गायत्र्यादि रुद्रारंभः । ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं० इत्यादि गायत्री पूर्ववत् ॥ १ ॥ गायत्र साम पूर्ववत् ॥ २ ॥ भ्राजा ॥२॥ भ्राजा ३ १ उ ॥ वा २ ॥ अग्नं आयूं षिंपवसे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० ओंसु वोर्जे मिषश्वनः ॥ ओंरे वाधस्व दुच्छुनाम् ॥ रु०
१९ भ्राजा ॥२॥ भ्राजा ३१उ॥वा२॥ ऐं भ्राजा॥३॥३॥अ॥
भ्राजं ॥३॥ ओंग्निर्मूर्द्धादी३ वाः का१ कू २ त् ॥ पतिः
पृथिवी ३ यांआं१या२म् ॥ अपांऽरेतांऽसी ३ जां
यिन्वां१ती २ ॥ आं । भ्राजं ॥२॥ आं । भ्राजा३
उवा ॥ ऐं । आंभ्राजं ॥३॥४॥ हांउ ॥३॥ शुक्रम् ॥
॥३॥ शुक्रंऽशुक्रम् ॥२॥ शुक्रंऽशुक्रम् ॥ शुक्रंऽशूक्रम्
॥ ३ ॥ नियुत्वान्वाया३वागां१ही २ ॥ अयाऽशुक्रो १९
आ३यामां१ यिता २ यि ॥ गन्तासिसुन्वा३तोगृ१ हा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२३म् ॥ हाँउ ॥३॥ शुक्रम् ॥३॥ शुक्रँशुक्रम् ॥२॥
शुक्रँशुक्रैम्। शुक्रँशूक्रैम् ॥२॥ शुक्रम् ॥ शूरे ॥
क्राँ२३४ ॥औहोवा ॥ ए । शुक्रम् ॥३॥५॥ हाँउ ॥३॥
चेन्द्रम् ॥३॥ चेन्द्रंचन्द्रम् ॥२॥ चेन्द्रं चन्द्रैम् ॥
चेन्द्रं चान्द्रैम् ॥३॥ अत्राहगोरा ३ मान्वा १ ता२ ॥
नामत्त्वष्टुरा २ पायिचा १ या२म् ॥ इत्थाचन्द्रमा
३सांगृ१हा२३म् ॥ हाँउ ॥३॥ चेन्द्रम् ॥३॥
चेन्द्रं चन्द्रम् ॥२॥ चेन्द्रंचन्द्रैम् ॥ चेन्द्रं चान्द्रैम्
॥२॥ चेन्द्रम् ॥ चा२ ॥ न्द्राँ २३४॥ औहोवा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० ऐ ॥ चंन्द्रम् ॥३॥६॥ हुम् ॥३॥ हो ॥३॥ हुꣳ ॥३॥ रु०
२० औहो ॥३॥ औहोयि ॥३॥ इन्द्रन्नरो । ने३मधि ॥
ताहवन्तायि ॥३॥ वयोब्रहत् ॥३॥ विप्राष्टये विध
र्मणे ॥३॥ यत्पारियाः ॥ यूनज ॥ तायिधियस्ताः
॥३॥ सत्यमोजः ॥३॥ रजः सुवः ॥३॥ शूरोन्रषा ॥
ता ३ श्रव । संश्चकामायि ॥३॥ मंद्रꣳसुधा ॥२॥
मंद्रꣳसुधं ॥ षमूर्जम् ॥ इषमूर्जम् ॥२॥ औगोम
तायि ॥ व्रजेभ ॥ जातुर्वन्नाः ॥३॥ बृहद्यशः ॥३॥ २०
दिविदधे ३ हम् ॥२॥ दिविदधे३ ॥ हाउवा ॥ वांगो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

डासुवा वृहद्भा २३४५ः ॥७॥ हाउ ॥३॥ आयिही ॥३॥
आयिहिया ॥३॥ आसाउ ॥३॥ आयाम् ॥३॥ नोमाः
॥३॥ किट् ॥२॥ इन्द्रन्नरो नेमधितोहवा२न्तोयि ॥
यत्पार्यायुनजतोधिया २ स्ताः ॥ शूरोन्नृषातोश्रवसश्च
का २ मायि ॥ आगोमतिव्रजेभ जातुवा२ न्नाः ॥
मना २३ हायि ॥ प्राणा २३ हायि ॥ चक्षू २३ हायि
श्रोत्रा २३ ४ हायि ॥ घोषा २३ हायि ॥ व्रता २३४
हायि ॥ भूता २३ ४ हायि ॥ पाना २३ ४ हायि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० चित्ता २३ हाँयि ॥ धीता २३ हाँयि ॥ सुवा २३ हाँयि रु०
२१ ज्याँता २३ यिहाँ २ ॥ वाँ २३४ औहोवा ॥ ऊ २३४५ ॥
॥ ८ ॥ हाँउ २ हाँउ ॥ भ्राजा ओवा ॥ ३ ॥ अग्निर्म्मू-
र्द्धादी ३ वाः का १ कुरत् ॥ पतिःपृथिवी ३ या
आ १ या म् ॥ अपारेतासी ३ जायिन्वा १ ती
२३ ॥ हाँउ २ हाँउ ॥ भ्राजा ओवा ॥ २ ॥ भ्राजा
३ ओ ५ वा ६५६ ॥ ए ॥ विश्वस्य जगतो ज्योती २३४५: २१
॥ ९ ॥ भ्राजा ॥ २ ॥ भ्राजा ३ १ उ ॥ वा २ ॥ अयारुचा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरिरायापुनानः ॥ विश्वाद्वेषाꣳसितरातिस युग्वभिः ॥
सूरोनसंयुग्वभिः ॥ धारापृष्ठस्यरोचते ॥ पुनानोअरु
षोहरिः ॥ विश्वायद्रूपा परियास्यृक्वभिः ॥ सप्तास्ये
भिर्ऋक्वभिः ॥ भ्राजा ॥२॥ भ्राजा ३१उ ॥ वा २ ॥
ए ॥ विश्वस्मैजगतेज्योतिः ॥ ज्यो२ ॥ ता२३४औ
होवा ॥ इट् इडा २३४५ ॥ १० ॥ श्लोकेद्वे ॥
हाउस्वरता ॥ ब्रह्माणा २ः ॥ इंद्रम् ॥ आ ॥ मंहया२
तो २३४ ॥ कैः ॥ अंवा २ द्वयान् ॥ अंहयेहे ॥ तंवा३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० ४५यि ॥ ऊ ६५६ ॥ श्लोकयता २३४५ ॥ ११ ॥ हाउ ॥ रु०
२२ अभि ॥ स्वरता ॥ ब्रह्माणआयिंद्रा २ म्‌ ॥ महेयास्तो
२३४ ॥ कैः ॥ अंवर्द्धाया २ न्‌ ॥ अहयेहंतवा २३४५
ऊ ६५६ ॥ श्लो२३४काः ॥ १२ ॥ अनुश्लोकेद्दे ॥
हाउस्वरता ॥ स्वंरतस्वंरा२३ताः ॥ आनवंस्तेरथम्रृ ॥
श्वायाताऽ१क्षू२३४ः ॥ हाउस्वरता ॥ स्वंरतस्वंरा २३
ताः ॥ त्वंष्टांवंत्रंम्पुरुहूं ॥ तांद्युमांता२३४म्‌ ॥ हाउस्वर २२
ता ॥ स्वंरतस्वं ॥ रां२ ॥ तां२३४ ॥ औहोवा ॥ स्वराऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ ता २३४५ ॥१३॥ औहोयि ॥ शंपदाम् ॥ मघं२र
यां ३१२३ यि ॥ षिणायि ॥ नकाममव्रतोहिनोतिन
स्पृशंत् ॥ रयिमो २३४५ इ ॥ डा ॥१४॥ सेतुषाम
हाउ ॥ ३ ॥ सेतूं२स्तर ॥३॥ दुस्तं ॥ रान् ॥ ३ ॥ दानेनां
दानम् ॥३॥ हाउ ॥ ३ ॥ अहमास्मि प्रथमजाऋता२३
स्यां ३४५ ॥ हाउ ॥ ३ ॥ सेतूं२स्तर ॥ ३ ॥ दुस्तं ॥
रान् ॥ ३ ॥ अक्रोधनक्राधम् ॥ २ ॥ अक्रोधनक्रोधम् ॥
हाउ ॥ ३ ॥ पूर्वदेवभ्यो अमृतस्यना ३२मा ३४५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० हाँउ ॥ सँतूंःस्तँर ॥ ३ ॥ दुस्तँ ॥ रान् ॥ ३ ॥ श्रद्धयाँ रु०
२३ श्रद्धाँम् ॥ ३ ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ योमाँददाँतिसइदेँवमा २ ३
वाँ ३४५ त् ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ सेँतूंःस्तँर ॥ ३ ॥ दुस्तँ ॥ रान्
॥ ३ ॥ सँत्यँनाँन्नृतँम् ॥ ३ ॥ हाँउ ॥ ३ ॥ अँहमन्नम
न्नमदन्तँमा २३ द्मी ३४५ ॥ हाउ ३ वा ॥
एँषाँगतिः ॥ ३ ॥ एँतँदँमृतम् ॥ ३ ॥ स्वर्गँछ
॥ ३ ॥ ज्योतिर्गँछ ॥ ३ ॥ सँतुःस्तीर्त्वाँ चँतुरा २३
२३४५ः ॥ १५ ॥ भ्राजाभ्राजे शुक्रचन्द्रे राजन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रौहिणके शुक्रियाद्ये हाउस्वरतादीनि चत्वारि सेतुषाम
चैषः पवित्रवर्ग एतेषामेकमनेकं वा सर्वाणि वा
प्रयुञ्जानः पूतो भवति ॥ इति पवित्रवर्गः ॥
अँवाधियाँ ॥ ग्नाइः सँमिधाजेनाँ २ नाम्न् ॥ प्रंता
इधे ३ नूम्न् ॥ इवायतीमुषासम् ॥ यहाई ३ वाँ ॥
प्रवाँ २ याँमुज्जिहाँनाः ॥ प्रभाँना २३ वाँः ॥ सस्रते
नाँकमंच्छं ॥ ईडा २३ भाँ ३४३ ॥ ओं २ ३४५
ई ॥ डा ॥ १६ ॥ महाँयित्राँ २३४ यिणाँम् ॥ अंवा
२ रस्तू ॥ द्युक्षम्माँ २३४ यित्राँ ॥ स्या २ यम्णाः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० दुरांधा २३४ षांम् ॥ वरौंहो २३४ ॥ वा ॥ णांऽ५ रु०
२४ स्यो ६ हायि ॥ १७ ॥ महित्रीणां मवरस्तू ६ ए ॥
द्युक्षम्मित्रस्यार्यम्णः ॥ दुरांधा २३ षांम् ॥ वरौंहो
२ ॥ हुम्मा २ ॥ ण ॥ स्यो २ ॥ यां २३४ औहोवा ॥
हाओवा ॥ ओवा २३४५ ॥ १८ ॥ त्वांवतो ३ ॥ हौ
३ हा ३१ यि ॥ पुरुवसो ३ ॥ हौ ३ हो ३१ यि ॥ वयं
मिन्द्रा ३ ॥ हौ ३ हो ३१ यि ॥ प्रणेता ३ः ॥ हौ ३ २४
हो ३१ यि ॥ स्मसिस्थाता ३ः ॥ हौ ३ हो ३१ यि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरीणा ३म् ॥ हौ ३ हो ३१ ओ २३४५ ई ॥ डा

॥ १९ ॥ इंद्रैन्ना २३४ रो । नेमौधा २३४ यिता । हवं ता

२३४ यि । यंत्पारी २३४ याः । यूनाजा २३४ तायि ।

धियास्ता२३ः । शूरोना२३४षा । ताश्रावा२३४साः । चं

कामा२३यि । आंगोमा २३४ता । व्रजायिभा२३४जा ।

त्वन्ना३उवा ३ । ए ३ । आयू २३४५ः ॥ २० ॥ त्यमूषु ।

वाजि । ना २३४५ म् । देवजूता २३४ म् । संहावानन्ता ।

रुता ३ । रंथ्ँ३रथानाम् । अरिष्टना २३४ यिमीम् । पृतना



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० ३४३जमाँशूं। स्वंस्तं। यायि। तांक्ष्यैमिहां ३४३। हूं ३ रु०
२५ वाँ५यिमा ६५६॥ २१॥ ईयइया ३ हाँयि। त्यमूषुवाजि
ना३न्नदे३वंजूतम्। ई४यईयाँ। हाँ२३४यि। संहावानं
तां। रुता३। रं६रथानाम्। ईयइया३हाँयि। अरिष्टा३।
नाँयि। मी३म्पृतं। नाँजमाँशूम्। ई४यईयाँ। हाँ२३४५
यि। स्वंस्तं। यायि। तांक्ष्यैमिहां ३४३। हूं३वाँ५यिमा
६५६॥ २२॥ त्रातारमिन्द्रमविता॥ रंमी २३ न्द्राम्। २५
हवे हवेसुहवं६शू। रंमी२३ न्द्राम्। हूवाँयिनुशक्रंपुरुहू।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तमी २३न्द्रांम् । इदं॰ स्वस्तिनोमघवा । वा३४३यि ।
तू३वा५इंद्रा ६५६: ॥२३॥ सोमः पुना । हो । नऊर्मि-
ऽणा६ए । अव्यं वारंविधा१वा३ती ॥ अग्रेवा२३४५ ।
चा २३४५: । पवमा २३ना३: । कार्२ना २३४ औ-
होवा । ऋदद २३४५ ॥२४॥ सासु । न्वेयोवसू२३
नाम् । योरा२ यामा२ । नेतायइडा २३ नाम् ।
सो२३माः । यः सुक्षिता२३४यिनो६हायि ॥ २५ ॥
हाउ३वा । विश्वतोदावन्विश्वतोनआभरं । हाउ३वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सा० यंत्वाशाविष्ठमीमहे । हाउ३वा । आयुः । हाउ३वा । रु०

२६ सुवः । हाउ३वा । ज्योतिः । हाउ३वा३ । ई२३४५ ॥२६॥

हाउ । ३ । आयुश्चक्षुर्ज्योतिः । औहोवा । इया । उदुत्त

मंवरुणपाशमा२३स्मात् । अवाधमंविमध्यमꣳश्रथा

२३या । अथादित्यव्रतेवयन्ता२३वा । अनागसोअदित

योसिया२३मा३ । हाउ३ । आयुश्चक्षुर्ज्योतिः । औहो

वा । ई२ । या२३४औहोवा । ई२३४५ ॥२८॥ दशती ॥ २६

अवोध्यग्निर्महित्रीणामिति द्वे त्वावत इन्द्रन्नरो ग्रामे

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गेयमायुरिति चास्य निधनं कुर्यात्-त्यमूषुद्वे त्राता रमिन्द्रꣳ हविरित्येतस्य स्थाने स्वस्तिन इति सोमः पुनान्त्यं ससुप्रथमं विश्वतोदावान्निति पूर्वं रहस्य उदुत्तमं वरुणपाश मित्येषोऽरिष्टवर्ग एतेषामेकमनेकं वा सर्वाणिवा प्रयुञ्जानः शतंवर्षाणि जीवति जरयैव विस्रꣳसते ॥ इति अरिष्टवर्गः ॥ २ ॥ अदं हंस्रुत् । संममृजाँविरवानि । त्वमेर्णा २३४ वान् । वंह्वधाँनाँ अरामणाः । महाँता २३४ मी । द्रपर्वतं वियाहः । मृजाँद्धा २३४राः । अंवंयंह्वान । वा २३न्हा ३४३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० न्। औ२४४५ई।डा।२८॥अदर्दरुत्समसृजाः। विखानि। रु०
२७ त्वमर्णवान्बद्बधानाँ६अरा२३म्णाः। महांतामिंद्रपर्वतं
वियो२३द्वाः। सृजाद्वारा२ः। अवा२यद्धान। वौ२। या
२३४औहोवा। हा३४३५न् ॥२९॥ सुष्वाणासः।
इंद्रस्तु। मसित्वा। सनिष्यं तश्चित्तुविनृ। म्णवा २३४
जाम्। आनः। भरा३ओ २३४ वा। सुवितंयस्यका।
ना। ताना। त्मांना। संहिया। मा ३४३। तूं३ वो ५ २७
५ ता ६५६ः ॥३०॥ श्रौ ३ हो ३ होयि। सू २३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४ ष्वा । णासा: इंद्रस्तु । मसित्वा । औ३हौ
३ हौयि । सा २३४ नी । ष्यंता: । ची ३ त्तुवि ।
नृम्णवाजाम् । औ ३ हो ३ होयि । आ २३४
ना: । भरा । सुविता ३ म् । यस्य कौना । औ
३ हो ३ हौयि । ता २३४ ना । त्मना । सहिया । मा
३४३ । तू३वो ५ ता ६५६: ॥ ३१ ॥ आतून
आ । द्रक्षु मा २३ न्ता म् । चायित्र६ग्राभा २३
४ हायि । संगृ २ भाया । महाहस्तो २३४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



न्। औ२४४५ई।डा।२८॥अंदर्द्दरुत्संमंसृंजाः। विंखांनि।
त्वंमर्णवान्वद्बधांनाः६अंरां२३म्णाः। महांतामिंद्रपर्वतं
विंयां२३द्वाः। मृजांद्वांरा २ः। अंवांस्यंद्दांन। वी२। यां
२३४औहोवा। हां३४३५न्॥२९॥ सुंष्वांणांसांः।
इंद्रंस्तुं। मंसिंत्वां। संनिष्यं तंश्चिंत्तुविन्। म्णवा २३४
जांम्। आंनः। मंरांओं २३४ वां। सुविंतंयस्यंकां।
नां। तानां। त्मांनां। संहियां। मां ३४३। तूं३ वां ५
५ ता ६५६ः॥३०॥ श्रां ३ हां ३ हांयि। सूं २३



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४ ष्वा । णांसा: इंद्रस्तु । मासित्वा । औ३हो
३ होयि । सा २३४ नी । ष्यंता: । ची ३ त्तुवि ।
नृम्णवाजाम् । औ ३ हो ३ होयि । आ २३४
ना: । भरा । सुविता ३ म् । यस्य कौना । औ
३ हो ३ होयि । ता २३४ ना । त्मना । सहिया । मा
३४३ । तू३वो ५ ता ६५६: ॥ ३१ ॥ आतून
आ । द्रक्षु मा २३ न्तो म् । चायित्र६ग्रामा २३
४ हायि । संगृ २ माया । महाहस्तो २३४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० हायि । दक्षा २ यिणायिना । महार२३ । हा२स्तां रु०
२८ २३४ औहोवा । दक्षिणे ३ नां २३४५ ।
॥ ३२ ॥ आँतूनइंद्रक्षुमाँऽन्ताम् । चित्रा २ ग्रां
२३४ भाँम् । संगृभां २३४ यां । मां ३ हां ३ ।
हा २ स्तां २३४ औहोवा । दक्षिणेनां २३४५
॥ ३३ ॥ आँतूनईं । द्रक्षुमा ६ न्ताम् । चित्रंॐग्राभ
ॐ संगृभा २ यां । चित्रंग्राभ ॐ सं । गृं । औ ३ २८
होयि । भां २३४ यां । ऐहोयि । महांहस्तीदक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२३ हौयि । औहो । वाहो २३४ वा । णा ५
यिनो ६ हाइ ॥ ३४ ॥ औतूनइंद्रक्षुमा ६न्ताम्
चित्रंग्राभ ५ संगृभाया । चित्रग्राभ ५ सं । गृ
२३ । ई ३४ हा । भा २३४ या । ऐहोयि ।
महांहस्तीदक्षा २३ हौयि । औहो । वाहो २३४
वा । णा ५ यिनो ६ हायि ॥ ३५ ॥ मृज्यमा
नाः । सुहस्तिया ३ । सामू ३ द्रायिवा । चंमि
न्वसा ३ यि । रायी ३ म्पायिशा । गम्बहुला ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० म्र । पुंरू २ स्पृ २३४ हाँम्र । पंवमा । नां । औ रु०
२९ ३ हौ । भियो २३४ वाँ । षाँ ५ सो ६ हाँयि ।
॥ ३६ ॥ मृज्यमाना ५ः सुहस्तिया । संमू २ द्रां
यिवा २ । चंमा २ यिन्वांसी २ । रयिम्पिशंगम्बहु
लम्पुरुस्पृहा औ ३ हौ । पवंमा २३ नां ३ । भि यो २३४
वाँ । षाँ ५ सो ६ हाँयि ॥ ३७ ॥ इतिगणपति संहिता
तृतीयादशति ॥ अदर्द्दः सुष्वाणास आतून इति
वर्गा मृज्यमानः सुहस्त्येति प्रथमषष्ठे चैषा वैनाय
कीनाम सँहितैषतां प्रयुञ्जन् विनायकं प्रीणाति ॥ २९

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

औमिन्द्रैरा । द्रैहरिभायियौहिमयूरा २ रोमाभा ३
यिः । मात्वाकायिचौत् । नियै मू २३४ रौत ।
नपाशिनाः । औतिधान्वे २ । वंताऊ २३ । औ २
यिहा २३४ औहोवा । वा २३४ याः ॥ ३८ ॥
आमद्रैरिन्द्र । हा ५ रिभायिः । यौहि मयूरं रोम
मायिः । मात्वा का २३ यिचौत् । नायियेमुरित् ।
नं पाशा २३ यिनाः । अतायिधा २३ न्वे । वंता
ऊ २३ । आरेयिहा २३४ औहोवा । वंयो ३ भी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० २३४५ः ॥ ३९ ॥ ओमद्रैरिन्द्र । हा ५ रिभीः । रु०
३० याँहिमयूरं रोमभाउ । वा २ । मात्वा २ । केचिन्नि
येमुरिन्नपाशिनाउ । वा २ । आती २ धन्वे
वंता ३१ उवा २३ । ई २३४ हीं ॥ ४० ॥ ओनः ।
एविश्वा । सुहोब्या २ म् । आइंद्र ५ सेम ।
त्सूभू १ षा तौ । ऊ २३४ पा । हो ३ होयि ।
ब्रह्माणिसंवनी । निवृत्रेहान् । परमा २३ ज्याः ।
आर्चा ३ होयि । षमा । औ ३ होवा । हो ५ ई । ३०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

डाँ ॥ ४१ ॥ औनोविश्वासुहाहाँव्याँम् । इन्द्रꣳ
समत्सुभूषतो । पव्रा २३ ह्वाँ । णिसवना । निवृ-
त्रहान् । परमा २३ ज्याः । आँचाँ ३ हाँयि ।
षमा । औ ३ हो वा । हो ५ ई । डाँ ॥ ४२ ॥
आँनोविश्वासुहाँव्याँम् । इंद्राम् । समत्सुभूषत ।
उपाब्रा १ ह्वा २ । णिसवनानिवृत्रहन् । परामा
१ ज्या २ः । ऋचीषा २३ मा ३४३ । ओ २३४५
ई । डाँ ॥ ४३ ॥ हो ४ वा । उहुवा ३ । होवा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० प्रसेनानायिः । शूरोआ ३ । ग्रायिरथानाम् । रु०

३१ गव्यन्नेतायि । हर्षता ३ यि । अस्यसेना । भद्रान्

कृण्वान् । इंद्रहा ३ । वात्सखिभ्याः । आसोमो

वा । स्त्रा ३ रभ । सौनिर्दत्तायि । हो ४ वा ।

उहुवा ३ । हो वा६ । हाउ वा ॥ ४४ ॥ औहो ३

वा २३४५ । प्रसेना नायिः । शूरो आ ३ । ग्रायिर

थानाम् । गव्यन्नेतायि । हर्षता ३ यि । अस्यसेना

भद्रान्कृण्वान् । इंद्रहा ३ । वात्सखिभ्याः । औहो ३१

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ वाँ २३४५ । ओँसोमो वा । स्त्राँ ३ रंभ । सा
३४३ । नी ३ दाँ५ता६५६यि ॥४५॥ औँहो ३वा २३४५
प्रसेनानायिः । शूरोआँ ३ । ग्रायिरथानाम् ।
गव्यन्नेतायि । हर्ष ता ३ यि । अस्यसेना । मंद्रा
न्कृण्वान् । इंद्रहा ३ । वांत्संखिभ्याः । औहो
३ वा २३४५ । ओसोमोवा । स्त्रां ३ रंभ । सा
३४३ । नी ३ दाँ ५ । ताँ २३४५ यि ॥ ४५ ॥
पवित्रंतेवितंतम्ब्रह्मणस्पते ३ । हुवे २३ । हुवे २३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० हावा ३ हा ३ । हायि । प्रभुगात्राणिपरियेषि रु०
३२ विश्वता २३ः । हुवे २३ । हुवे २३ । हावा ३ हा
३ । हायि । अतप्ततनूर्नतदा २ मोअश्नुते ३ ।
हुवे २३ ।२। हावा ३ हा ३ । हायि । शृतासइद्वहन्तः
संतदा २ शत । हुवे २३ । हुवे २३ । हावा ३
हा३ । हा ३४ । औहोवा । अंकादेवाना २म्परमेवियो
२ मा २३४५ न् ॥ ४६ ॥ पवित्रंतेविततंब्रह्मण
स्पते ३ । हुवायि । औहोवा २ । प्रभुगात्राणि ३२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परियोषाविश्वता २३ः । हुवायि । औहोवा २
अंतप्तंतनूनंतदा २ मोअश्नुते ३। हुवायि । औ
होवा २ । शृतासइद्वहन्तः संतदा २ शत । हुवायि ।
औहो २ । वा २३४ । औहोवा । अर्कस्यदेवाःपरमेवि
यो २ मा २३४५ न् ॥ ४७॥ दशती ॥ आमन्द्रैरिन्द्र
हरिभिरानो विश्वासु हव्यम्प्रसेनानी रिति वर्गाः
पवित्रन्त इति द्वे एषा स्कन्दस्य सꣳहितैताम्प्रयु-
ञ्जन् स्कन्दं प्रीणाति ॥ इति स्कन्दसंहिता ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० ईदा ६ मे । विष्णु २ः । विचैक्रा २३४मायि । त्रायि रु०
२३ धानि । दधायिपा १ दा २ म् । संमू २ हो १ । द्वा २३
मा ३ । स्या २ पा २३४ औहोवा । ए ३ । सुले १
॥४८॥ हाउ ३ । ऊ२ ।२। उ२ । वा ३ । हाउवा ३
हंमूहंहंस् । अर्चिः शोचिस्तपोहरः । प्रक्षस्यवृष्णोअरु
षस्यनूमा २३ हाः । प्रनोवचोविदथाजातवेदा २३
सायि । वैश्वानरायमतिर्नव्यसेशू २३ चीः । सोमइ ३३
वपवते चारुरग्ना २३ या ३ यि । हाउ ।३। ऊ २।२। ऊ २।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

वा ३ । हाउवा ३ । ई २३४५ ॥४९॥ हाउहाउ । हुंप्
प्रक्रांवियाम् । उशंने । वंभ्रुवाणाः देवादेवा । नां
३ अंनि । मांविवंक्ति । मंहिव्रताः । शुचिवां ३ ।
धुंःपवांकाः । हाउहाउ । हुंप् । पदावरा ।
हो ३ अभि । आं ३४३ यि । ती ३ रां ५ यिमा
६५६ न् ॥५०॥ उंहुंवाहाउ । ३ । संहस्रशीर्षाः
पुरु २३ षाः । सहस्राक्षः संहस्रा २३ पात् । संभूमि टं.
सर्वतो वा २३ त्वाँ । अत्यतिष्ठद्दशांगू २३ लाम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



उहुवाहाउ । २ । उहुवा ३ हाउ । वा ३ । इट्-
इडा २३४५ ॥ ५१ ॥ उहुवौ हो वा २ ।३। त्रि-
पादूर्ध्व उदैत्पुरु २३ षाः । पादोस्येहाभवत्पू २३
नाः । तथाविष्वाङ्वि यक्रा २३ मात् । अशनानशने
आ २३ भी । उहुवौहो वा २ ।२। उहुवौ । हो २ । वा
२३४ । औहोवा । ई २३४ ड़ा । उहुवौ होवा २ ।२।
उहुवौ । हो २ । वा २३४ औहोवा । सू २२४ वाः ।
उहुवौहोवा २ ।२। उहुवौ । हो २ । वा २३४ । औ



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हाेवा । ऊँ २३४५ ॥५२॥ इयौहोवा २ । ३ । पुरुष
एवेद ꣳसा २३ वाम् । यद्भूतंतयच्चभावा २३ याम् ।
पादोस्यसर्वाभूता २३ नी । त्रिपादस्यामृतंदा२३इवी ।
इयौहोवा २ ।२। इयौ । हो २ । वा २३४ औहोवा ।
ई २३४ डा । इयौहोवा २ । इयौहोवा २ । इयौ ।
हो २ । वा २३४ । औहोवा । ज्यो २३४ती: । इयौ-
होवा २ । इयौहोवा २ । इयौ । हो २ । वा २३४ ।
औहोवा । ई २३४५ ॥५३॥ हाउ । ३ । तांवानस्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० महा २३ इमां ३ । हाउ ।३। ततोज्यायां ६ श्चपुरू रु०

३५ षां ३ः । हाउ ।३। उतामृतत्वस्येशा २३ नां ३ः ।

हाउ ।३। यदन्नेनातिरोहा २३ ती ३ । हाउ ।३। वा ३।

इटइडा २३४५ ॥५४॥ हाउ ३ वा । ततोविराडजायत ।

हाउ ३ वा । विराजोअधिपुरुषः । हाउ ३ वा । संजातो

अत्यरिच्यत । हाउ ३ वा । पश्चाद्भूमिमथोपुरः ।

हाउ ३ वा ३ । ई २३४५ ॥५५॥ हाउ ।३। अस्मीन्नं ३५

स्मिंन् । ३ । नृम्णाइनृम्णं । ३ । निधायिमाहे । ३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कयानश्चित्रा ३ आभू १ वा२त् । ऊतीसदा वृ३धाः सा १ खा २ । कयाशचिष्ठा ३ यावा १ ता २३ । हाउ ।३। अस्मीनास्मिन् ।३। नृम्णाइन्नृम्णम् ।३। निधाइ-माहे ।२। निधा २३इ । मा२ । हा २३४ । औहोवा । सुवर्ज्योती २३४५: ॥५६॥ इदम्विष्णुः प्रक्षस्यवृष्णः प्रकाव्यमुशने वव्रुवाण इति वाराहमन्त्यं पुरुषव्रते चैषा वैष्णवी नाम सꣳहितैतां प्रयुञ्जन् विष्णुं प्रीणाति ॥

इति विष्णुसंहिता ॥ दशती ॥८॥ आवोराजा । नमंध्वं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



रस्यरुद्राम् । हो । तां । राम् । से त्यंयजा३म्
रोदसीयोः । अग्निम्पू । रां । तंनयि । त्नोरंचित्तात् ।
हिरण्यं । रू । पा३मंव । सा३४३ यि । का३र्णू५ ध्वा
६५६ म् ॥५७॥ तद्वौहोवां । गाया २ । सुतौ इसां २३४
चां । पुरुहूता । यसात्वा १ना२यि । शंयत । हा । औं-
३होयि । गां२३४वांयि । नौ२शां२३४ औहोवा । ए ३ ।
किने २ः४५ ॥५८॥ तद्वोगाया । सुतायिसचा ३ । पुरु-
२३हूतां ३४ । होहो ३ । यासेत्वा २३४ नांयि । शंयद्गा-



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२३ वे । नशौ २। हौ २। हुवो २३४। वा । का५यिनो
६ हायि ॥ ५९ ॥ तद्वोगायसुतेसचा६ए । पुरुहूताय-
सत्वने । पुरुहूता । यासत्वा २३ ना३४इ । शंयत्
गौवीओ २३४ वा । ना २३ शा ३। कौ ३४५ईनो ६
हायि ॥६०॥ तद्वोगायसुतेसचा ६ ए । पुरुहूतायसत्व-
नाई । शंयद्गा २३वे । ए२हो १आ २३ईही । नशा२३।
का २इना २३४ औहोवा । ई२३४५ ॥६१॥ हाउ ।३।
आज्यंदोहम् ।३। मूर्द्धानंदाइ । वा३अ२ । तिम्पृथि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सा० ठ्याः । वैश्वानराम् । ऋतआ । जातमग्निम् । कवि रु०

३७ ँ सम्रा । जा३मति । थिअ्ग्नानाम् । आसन्नः पा । त्रा३

अ्ग्न । यंतंदेवाः । हाउ ।३। आज्यदोहम् ।२। आ-

ज्यदो५हाउ । वा । ए । आज्यदोहम् ।२। ए । आ

ज्यदोहा २३४५म् ॥ ६२ ॥ हाउ ।३। हुम् । चिदो

हम् । ३ । मूर्द्धानन्दायि । पूर्ववत् । हाउ ।३। हुम् ।

चिदोहम् ।२। चिदो३हाउ । वा ३। ई २३४५ ॥६३॥

हाउ ।३। च्योहम् ।३। मूर्द्धानंदाइ । पूर्ववत् । हाउ ३७

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

।३। च्योहम्।२।च्यो३हाउ।वा३। ए३। ऋतम्॥६४॥
अधिपं। तायि। मित्रपं। तायि। क्षत्रपं। तायि। स्वःपं।
तायि। धनपता २ इ। ना २ मा:। मन्युनावृत्रहा
सूर्येणस्वराडयज्ञेनमघवादक्षिणास्यप्रियातनूराज्ञावि-
शंदाधार। वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशचीपतिरन्नेनगयः पृ-
थिव्यासृणिकोऽग्निनाविश्वंभूतम। भ्यभवोवायुना-
विश्वाः प्रजाअभ्यपवथावषट्कारेणार्द्धमाक्सोमे
नसोमपाः समित्यापरमेष्ठी। येदेवादेवाः। दिवि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० षदंः । स्थते भ्यो वो देवा देवे भ्यो नमः । येदेवा- रु०
३८ देवाः । अंतरिक्षसदः । स्थते भ्यो वो देवा देवे भ्यो
नमः । येदेवादेवाः । पृथिवीषदः । स्थते भ्यो वो
देवा देवे भ्यो नमः । येदेवादेवाः । अप्सुषदंः ।
स्थते भ्यो वो देवा देवे भ्यो नमः । येदेवादेवाः ।
दिक्षुसदः । स्थते भ्यो वो देवा देवे भ्यो नमः ।
येदेवादेवाः । आशासदः । स्थते भ्यो वो देवा
देवे भ्यो नमः । अवज्यामिवधन्वनोबितमन्युन्न ३८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यामासिमृडंतान्नंइहंत्र्रस्मंभ्यंम् । इंडा २३ भा ।
यइदंविश्वंभूतम् । युंयो ३ । आंउ । वा २३ । । ना
२३४ मा: ॥६५॥ अंधिपं । तांइ । मित्रपं । तांइ ।
क्षत्रपं । तांइ । स्वःपं । तांइ । धनपंता २ यि ॥ ना २
मा: । नमउंत्तांतिभ्यश्चोत्तन्वानेभ्यश्चनमोनिषंगिभ्य
श्चोपवी।तिभ्यश्चनमोस्यद्भ्यश्चप्र । तिदंधानेभ्यश्चनंमः
प्रविद्ध्यद्भ्यंश्चप्रव्याधिभ्यश्चनंमःत्संरभ्द्यश्चत्सारिभ्य
श्चनंमःश्निं । तेभ्यश्चश्रायिभ्यश्चनंमस्तिष्ठंद्भ्यंश्चो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सा० पतिष्ठद्भ्यश्चनमोयतेचवियतेचनमः पंथेचविपथाय रु०
३९ च । अंवज्यामिवधन्वनोवितेमन्युन्नयामसिमृडंता
न्नइहअस्मभ्यम् । इडा २३ भा । यइदंविश्वंभूतम् ।
युयो ३ । आउ । वा २३ । ना २३४ मोः ॥ ६६ ॥
अधिपं । ताइ । मित्रपं । ताइ । क्षत्रपं । ताइ । स्वः
पं । ताइ । धनपंता २ इ । ना २ मोः । नमोन्नायनमो
न्नपतयएकाक्षायचावपन्नादायचनमोनमः । रुद्रा
यतीरसेदनमः स्थिरायास्थिरधन्वनेनमः प्रतिपदाय ३९

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चपटरिणेचनमंस्त्रियंवंकायचक । पार्दिनंचनमआश्री
येभ्यश्चप्रत्याश्रायेभ्यश्चनमः कंव्येभ्यश्चाबिरिफे
भ्यश्चनमः संवृतेचविवृतेच । अवज्यामिवधन्वनोवि
तेमन्युन्नयामासिमृडंतान्नइहअस्मभ्यम् । इंडा २३
भा । यइदंविश्वंभूतम् । युंयो ३ । आंउ । वा २३ ।
नां २३४ मांः ॥ ६७ ॥ आवो राजा तद्वोवर्ग आज्य
दोहानि देवव्रतानि चैषा रौद्री नाम सꣳहितैतां
प्रयुञ्जन् रुद्रं प्रीणाति ॥ समाचाराद्वासंतादिसामा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० नि ॥ वा५संतः । ई३न्नू३रंतायाः । ग्रीष्मइन्नूरा १ रु०
४० न्ता ३याः । वर्षाण्यनुशा ३ । हुं । रा३दाः । हेमंतः
शिशिरइंनुरा२तियाउ । वा २३४५ ॥ ६८ ॥ का ५
या । नक्षा३यित्रा३आभुवात् । ऊ । ताःसंदावृधः
से । खा । औ३होहाई । कया २३ शचायि । छ्यौ
हो ३ । हुंमा २ । वाऽ२त्तौ ३५ हायि ॥ का५स्त्वा ।
सत्यो ३ मा ३ दानाम् । मा । हिष्ठोमात्सादंन्धे ।
सा । औ३होहाई । दृढा २३ चिदा । रुजौहो ३ । ४०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

हुंमार । बाऽ२सो ३५ हाँयि ॥ औ ५ भी । षुणा
३: सा ३ खीनाम् । ओ । विताजराई तृ । णाम् ।
औ २३ होहाई । शंता २३ म्मवा । सियौहो ३ । हुम्मा
२ । ताऽ२ यो ३५ हाँयि ॥ ७१ ॥ कयानश्चित्रआ
भुवदूतीसदावृधः सखा । कयाशचिष्ठयावृता । कं
स्त्वा सत्योमदानांमः हिष्ठोमत्संदंधसः । दृढाचिदारु
जेवसु । अभीषुणःसखीनामविताज.रतृणाम् । शतं
भवास्यूतये ॥७२॥ स्वस्तिनइंद्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० पूषाविश्ववेदाः । स्वस्तिनस्ताक्ष्योंअरिष्टनेमिः स्व रु०
४१ स्तिनोबृहस्पतिर्दधातु । ॐ स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द
धातु ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ इति सामवेदीय
रुद्राध्याय जपः ॥

## ॥ आरती ॥

ततःपञ्चोपचारेण शिवंसम्पूज्य आरार्त्तिक्यं कुर्यात्
ॐ उद्यँल्लोकाँनरोचयः । हौयि । इमाँल्लोकाँनरोचयः । ४१
हौयि । प्रजांभूतमरोचयः । हौयि । विश्वम्भूतं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

रोचयः। हो २। हाँ २३४। औहोवा। घंम्मौज्योंती
२३४५ः॥

ओं जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा, शिव जय गिरिजाधीशा। त्वं मां पालय नित्यं २ कृपया जगदीशा। ॐ हर हर हर महादेव॥

कैलाशे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने। शिव कल्प० गुञ्जति मधुकरपुञ्जे २ कुञ्जवने गहने। हर०। ॐ कोकिल कूजति खेलति हंसावन ललिता। शिव हंसा० रचयति कला कलापं नृत्यति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.





मुदसहिता । ॐ हर० । तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला
मणिरचिता । शिव शाला० तन्मध्ये हरनिकटे २
गौरी मुदसहिता । ॐ हर० । क्रीड़ा रचयति
भूषा रञ्जित निजमीशम् । शिव रञ्जि० ब्रह्मादि-
कसुरसेवित २ प्रणमति ते शीर्षम् । ॐ हर० ।
विबुधवधूर्बहुनृत्यति हृदये मुदसहिता । शिव हृद०
किन्नर गानं कुरुते २ सप्तस्वरसहिता । ॐ हर० ॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते । शिव मृद०
क्वणक्वण ललिता वेणु २ मधुरं नादयते । ॐ हर० । ४२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुणुरुणु चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता । शिव-
नूपु० चक्रावर्त्तं भ्रमयति २ कुरुते तां धिकताम् ।
ॐ हर० ।

तांतां लुप चुप तांतां डमरु वादयते । शिव डम०
अंगुष्ठांगुलिनादं २ लस्यकतां कुरुते । ॐ हर०
कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम् । शिव पञ्चा०
त्रिनयन शशिधर मौलिं २ विषधर कण्ठयुतम् । ॐ हर०
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम् । शिव पाव०
डमरु त्रिशूल पिनाकं २ करधृत नृकपालम् । ॐ हर०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते । शिव झल्ल०
नीराजयते ब्रह्मा २ वेदऋचां पठते । ॐ हर०
इति मृदुचरणसरोजं हृदि कमले धृत्वा । शिव हृदि०
अवलोकयति महेशं २ ईशं अभिनत्वा । ॐ हर०
रुण्डरचित उरमाला पन्नगमुपवीतम् । शिव पन्न०
वामविभागे गिरिजा २ रूपं अतिललितम् । ॐ हर०
सुन्दर सकल शरीरे कृत भस्माभरणम् । शिव कृत०
इति वृषभध्वजरूपं २ तापत्रयहरणम् । ॐ हर०
ध्यानं आरतिसमये हृदये इति कृत्वा । शिव हृद०



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रामं त्रिजटानाथं २ ईशं अभिनत्वा । ॐ हर०
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते । शिव प०
शिवसायुज्यं गच्छति २ भक्त्या यः शृणुते। ॐ हर०

## ॥ अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः ॥

ओंपांती २ः । ३ । दिवंआं । पाती २ः । ३ । अन्तं-
रिक्षं । स्यां । पाती २ः । ३ । पांर्थिवं । स्यां । पाती
२ः । ३ । अपां मोषधीं । नाम् । पाती २ः । ३ ।
विश्वस्यं भूतं । स्या । पाती २ः । पांती २३ः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा० पा २ । ता २३४ औ हो वा । ए । पति र्दिवः । रु०
४४ ए । पति रन्त रिक्षस्य । ए । पतिः पार्थिवस्य ।
ए । पति रपा मोषधीनाम् । ए । पति र्विश्वस्यं
भूतस्य । ए । सुवर्ज्योती २३४५ः ॥

ओं राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुवेराय वैश्रवणाय ४४
महाराजाय नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओं स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्य माधिपत्य मयं समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरा-र्द्धात् पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति ।

ओं विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वत स्पात् । सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.



ओं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ओं साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय ओं नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

## ॥ अथ प्रार्थना ॥

ओं अङ्गहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर ॥
पूजितोऽसि मया देव तत्क्षमस्व भ्रमात्कृतम् ॥ १ ॥ 

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यद्यप्युपहतैः पुष्पैरपास्तैर्भावदूषितैः ॥
केशकीटापविद्धैश्च पूजितोसि मया प्रभो ॥ २ ॥
अन्यथासक्तचित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो ॥
मनोवाक्कायदुष्टेन पूजितोसि त्रिलोचन ॥ ३ ॥
यच्चोपहतपात्रेण कृतमर्घ्यादिकं मया ॥
तामसेन च भावेन तत्क्षमस्व मम प्रभो ॥ ४ ॥
मन्त्रेणाक्षरहीनेन पुष्पेण विकलेन च ॥
पूजितोसि महादेव तत्सर्वं क्षम्यतां मम ॥ ५ ॥
अयं दानकालस्त्वहं दानपात्रं–
भवानेव दाता त्वदन्यं न याचे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.





भवद्भक्तिमन्तःस्थिरां देहि मह्यं
कृपाशील शम्भो कृतार्थोऽस्मि यस्मात् ॥ ६ ॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥
शिवतत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ॥
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमोनमः ॥
इत्येवं सम्प्रार्थ्य प्रणम्य यथासुखं विहरेदिति ॥ ४६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

# ॥ शिवमानसपूजा ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्यांबरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चंदनम् । जातीचंपकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥ सौवर्णे नवरत्नखंडरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रंभाफलं पानकम् । शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखंडो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

 

ज्ज्वलं तांबूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥ छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदंगकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा । साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥ आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । संचारः पदयोः प्रदक्षिणाविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं



CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

शंभो तवाराधनम् ॥ ४ ॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ॥ ५ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४८ प्राप्तिस्थानम्:-

पं० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल
संस्कृत पुस्तकालय,
कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

Published by Kripashankar shukla,
Prop. of Pt. Raghunandan Prasad's Sanskrit Pustakalaya,
Kachaurigali, Benares City.
and
Printed by K. B. Pawagi, at the Hitchintak Press, ४८
Ramghat, Benares City.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति

# सामवेदीया रुद्री ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection